विभाग परिचय

पूर्व में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (सी आई ई) के नाम से जाना जाने वाला 'शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय', शिक्षा के क्षेत्र में, व्यवसायिक शिक्षा और अनुसंधान का पहला बड़ा संस्थान है जो स्वतंत्रता के बाद स्थापित किया गया । भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू और प्रथम शिक्षा मंत्री, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद ने 1947 में इसकी स्थापना और प्रारम्भिक वर्षों की गतिविधियों में काफी रुचि ली। तब से विभाग शिक्षक शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता के नवीन मानदंड स्तापित कर रहा है। शिक्षा विभाग में निम्नलिखित शैक्षणिक कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है-

- शिक्षा स्नातक (बी.एड.)
- शिक्षा निष्णात (एम.एड.)
- मास्टर ऑफ फिलोस्फी (एम.फिल.)
- विद्या वाचस्पति (पीएच.डी.)

कार्यक्रम सारणी

शनिवार 9 **मार्च** 2019

प्रातः 10:00 -11:00 : **पंजीकरण और जलपान**

11:00-12:00**: उदघाटन सत्र**

दोपहर 12:00-02:30: **प्रथम सत्र**

02:00-02:30: **मध्याहन भोजन**

02:30-4:30: **द्वितीय सत्र**

सांय 04:30-5:15: **समापन सत्र**

05:15-05:30: **प्रास्थानिक जलपान**

आयोजन समिति:

शिवा श्रीवास्तव, कविता रानी, रितु गिरि, आलोक, संजीत कुमार दास, अंजलि तिवारी, विशाल।

संपर्क सूत्र: 8743059593 (**शिवा श्रीवास्तव**)

pdrgcie@gmail.com

शिक्षा विभाग

३३,छात्रा मार्ग,दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– ११०००७

संस्कृत वाङ्गमय में विज्ञान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आई.ए.एस.इ के माध्यम से अनुदानित कार्यक्रम)

पैनल चर्चा

दिनांक: ०९/०३/२०१९

आयोजन स्थल:

सम्मेलन कक्ष, शिक्षा विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली– ११०००७

संयोजक

डॉ राकेश कुमार

डॉ ज्ञानेन्द्र कुमार

शिक्षा विभाग

३३,छात्रा मार्ग,दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– ११०००७

ई-मेल- pdrgcie@gmail.com

संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"

संस्कृत भाषा, भारत की ही नहीं, विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। भारत की प्रायः सभी वर्तमान भाषाओं का या तो यह आदि स्रोत है या फिर वे इससे गहन रूप से प्रभावित हैं। ऋग्वेद के रूप में मानव समाज की पहली लिखित पुस्तक इसी भाषा में हमें उपलब्ध है। इस भाषा में विपुल साहित्य भंडार है जो अपने आप में बहुआयामी और अतिविस्तृत है। इसमें एक ओर जहाँ विशद् रूप से नीति-शास्त्र, मूल्य-शास्त्र और, आचार-शास्त्र वर्णित है वहीं दूसरी ओर युद्ध-शास्त्र, शस्त्रनिर्माण शास्त्र और आयुधास्त्र, निर्माण-शास्त्र भी सन्निहित है। संस्कृत वाङ्मय में जितनी व्यापकता दिखलाई देती है उससे भी ज्यादा इसमें गहनता है । इसमें मानव जीवन के जन्म के पूर्व से मृत्यु पर्यन्त कर्तव्यों का विधान प्राप्त होता है । संस्कृत मात्र एक भाषा नहीं है, अपितु स्वयं में भारत और उसकी संस्कृति के प्राणपुंज को समाहित किए हुए है। हमारे पूर्वजों द्वारा प्राप्त की गई विकास की उपलब्धियों को जानने के लिए संस्कृत भाषा में उपलब्ध साहित्य और अन्य आलेखों को देखना भी अत्यावश्यक है। संस्कृत का विपुल साहित्य पाणिनी, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, चरक, सुश्रुत, लीलावती और कालिदास जैसे अनेकानेक बहुमुखी प्रतिभा के धनी विद्वानों व विदुषियों द्वारा लिखा गया है। संस्कृत में लिखित दस्तावेज और साहित्य अपने आप में एक उपलब्धि हैं। वैज्ञानिक चेतना और विज्ञान सम्मत उपलब्धियों से भरा संस्कृत वाङ्मय आज लोगों की नजर से ओझल है जबकि इसमें अंतरिक्ष के रहस्यों, चिकित्सा क्षेत्र के गूढ़ व्यवहार, प्रकृति के प्रारूप तथा मानव स्वभाव की अद्भुत कार्य समझ आदि पर विस्तृत लेखन हुआ है। संस्कृत भाषा भारतीय ज्ञान विज्ञान की कुंजी है।

सतत पोषणीय अथवा टिकाऊ विकास के तौर तरीके तथा समझ की बढ़ती जरूरत के समय संस्कृत में उपस्थित 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का कल्याणकारी उद्घोष हमें राह दिखाता है। पर यह उद्घोष मात्र घोषणाएँ नहीं हैं, अपितु जीवन-दर्शन व व्यवहार है। संस्कृत वाङ्मय गूहय ज्ञान ही कदाचित वह ज्ञान हो जिससे भारत भूमि को विश्व गुरु (सोने की चिड़िया) के रूप में अलंकृत किया होगा, इस हेतु संस्कृत वाङ्मय में ऐसे अनुसंधान की आवश्यकता है, जो इस ज्ञान को देश काल तथा परिस्थिति के अनुसार प्रासंगिक बना सके। इस उद्देश्य को आधार बनाते हुए इस पैनल चर्चा का आयोजन किया जा रहा है :-

कार्यक्रम के उद्देश्य

- संस्कृत वाङ्मय में प्रकृति और विज्ञान से संबंधित अवधारणाओं का अन्वेषण।
- संस्कृत साहित्य में विज्ञान और वैज्ञानिक तत्त्वों के प्रमाणों की खोज।
- संस्कृत में प्रकृति और विज्ञान से संबंधित प्रामाणिक ज्ञान का संकलन।
- संस्कृत वाङ्मय में प्रकृति और विज्ञान के क्षेत्र में किए गए विभिन्न शोधों का चिन्हिकरण एवं संग्रहण।
- प्रकृति, चिकित्सा, भौतिक तथा रासायनिक विज्ञान, जीव एवं वनस्पति विज्ञान आदि आधुनिक विषयों का संस्कृत वाङ्मय में अन्वेषण।
- अनुसन्धान के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय में वर्णित वैज्ञानिक ज्ञान का प्रासंगिकीकरण।
-